PRIVATE CIRCULATION ONLY

दिव्य ज्योति

मार्च 2006 ISSUE 0306 ''मैं संसार की ज्योति हूँ'' न्यूज़ लैटर

ईश्वरीय अनुभव पर आधारित क्रूस-यात्रा

प्रारंभिक प्रार्थना: *हे प्रभु येशु! आप इसीलिए संसार में आये कि ईश्वर और मानव–जाति के बीच आपसी संबध को पुन: स्थापित करें। धर्मशिक्षा, बाइबिल और धार्मिक पुस्तकों के द्वारा हम ईश्वर के विषय में ज्ञान मिला है। परन्तु क्या कभी उनसे हमारी मुलाकात हुई है ? यदि नहीं हुई है, तो इसका अर्थ यह है कि हममें आपका कार्य असफल रहा, क्योंकि हमने आपके साथ सहयोग नहीं दिया।*

हे प्रभु येशु, आप अब अपने पिता परमेश्वर के दाहिने विराजमान हैं। हमारी सहायता कीजिए कि इस क्रूस–यात्रा के दौरान हम भी आपके साथ ईश्वरीय अनुभव में सहभागी बन सकें और यह क्रूस–यात्रा हम सबके लिए ईश्वरीय अनुभव का साधन बन जाए।

पहला स्थान - येशु को प्राणदण्ड की आज्ञा मिलती है : *हे प्रभु! आप सभी के द्वारा दोषी ठहराये गये। आपके शत्रुओं ने यह दोष लगाया कि आप क्रान्तिकारी हैं तथा ईश–निन्दक हैं, क्योंकि आपने स्वंय को पिता का इकलौता पुत्र बताया। आपके मित्रों ने, जो नाम–मात्र के थे, आपके जीवन को असफल माना। आप अकेले थे, साथ में न मित्र थे और न ही शिष्य गण। फिर भी आप ने उस समय अपने पिता ईश्वर की उपस्थिति का गहरा अनुभव किया ओर उनकी इच्छा को सहर्ष स्वीकार किया। ईश्वर इस समय यहाँ उपस्थित हैं। उस उपस्थिति का ध्यान रखते हुए अब हम उनका अनुभव करने का प्रयास करें।*

दूसरा स्थान- येशु अपना क्रूस स्वीकार करते हैं : *हे प्रभु! आपका क्रूस केवल लकड़ी का एक टुकड़ा नहीं था। वह केवल अपमान नहीं था। वहाँ उस लकड़ी में, उस अपमान में, उस दु:ख में, स्वंय ईश्वर की इच्छा उपस्थित थी जिससे उसकी महिमा हो। हे प्रभु! हमारी सहायता कीजिए कि हम हर दु:ख, हर अपमान एवं हर परीक्षा में ईश्वर की उपस्थिति व इच्छा को पहचान कर उनका अनुभव कर सकें।*

तीसरा स्थान - येशु पहली बार क्रूस के नीचे गिरते हैं : *हे प्रभु, आप धरती पर गिर पड़े। वह सुन्दर धरती जिसकी आप ने स ष्टि की, वह सुडौल पत्थर जिसको आप ने रुप दिया, ये सब आपके हैं और आपको प्रणाम करते हैं। हे प्रभु, कई बार, मैं भी आध्यात्मिक रुप से गिरता हूँ। शायद मैं फिर गिर सकता हूँ। किन्तु मैं चाहे कितने भी नीचे गिर पड़ूँ, आप वहाँ भी मुझे स्वीकार करने के लिए तैयार हैं। मुझे क पा दीजिए कि मैं आपकी*

स्वर्ग और प थ्वी की रानी! मानव जाति का माँ से एक विनती

सन्त अल्फोन्सस लिगोरी *ने माँ मरियम के विषय में जैसे कहा था, "अपने निष्कलंक गर्भागमन के समय सभी सन्तों और दूतों से पवित्रता और ईश क पा में सर्वधिक परिपूण माँ मरियम जन्म से ही एक महान सन्त थी। मरियम की आत्मा ईश्वर द्वारा रचि सबसे सुन्दर व निर्मल आत्मा थी।"*

हे स्वर्ग और प थ्वी की रानी! जिसे सबसे सुन्दर आत्मा मिली, अपने अति सुन्दर चहरे से अपनी ममता झलका दे। अपनी अति सुन्दर आँखों से हम पापी बच्चों पर क पा द ष्टि कर दे। वो आँखें, जो हमारी आत्मा के लिए तरसती व आँसू बहाती हैं, वो आँखें, जिन्होंने अपने प्रिय पुत्र का दु:खभोग, पीड़ा व क्रूस मरण हमारे उद्धार के लिए चुपचाप देखकर आँसू बहाये और दूसरों की सान्त्वना के लिए तरस गई। हम पर ऐसी क पा कर कि हम, हे दैविक प्रेम से परिपूर्ण माँ, अपनी आँखें, अपने ह्रदय और अपने हाथों को दु:खी व ज़रुरतमन्द भाई–बहनों के लिए खोल सके, उनमें तेरे पुत्र का प्रतिरुप देख सकें और अपने समान उन्हें प्रेम कर उनके लिए तेरे पुत्र समान बन सकें। आमेन।

"हम सब अपना-अपना रास्ता पकड़ कर भेड़ों की तरह भटक रहे थे। उसी पर प्रभु ने हम सबों के पापों का भार ड़ाला है।" (इसायाह 53:6)

सहायता से फिर उठ कर आपके साथ आगे चल सकूँ।

चौथा स्थान - येशु अपनी माता से मिलते हैं : मरियम की चमकती सुन्दर आँखों में ईश्वर की महिमा पूर्ण रुप से झलक रही थी। ईश्वरीय प्रेम उन विनम्र हृदयों में उमड़ रहा था। उस दुःखपूर्ण परिस्थिति में भी उनका हृदय ईश्वरीय आनन्द से परिपूर्ण था।

हम सभी भी माता मरियम को प्यार करें तथा उनमें ईश्वरीय दया व प्रेम को देखें। कभी–कभी हम उनके साथ स्वार्थपूर्ण व्यवहार करते हैं – हम उनसे सदा वरदानों की माँग करते रहते हैं। किन्तु हम यह भूल जाते हैं कि वे ईश्वर की सर्वोत्तम साक्षी हैं, ईश्वर की ओर जाने का द्वार हैं जिसके द्वारा हम ईश्वर की महिमा के दर्शन कर सकते हैं। अतः उनके द्वारा और उनके साथ हम अपना क्रूस लेकर ईश्वर की ओर अग्रसर होने का प्रयत्न करें।

पाँचवाँ स्थान - सिमोन येशु की सहायता करते हैं : सिमोन, जो एक साधारण कारीगर था, शायद शुरु में येशु का क्रूस उठाना नहीं चाहता था। किन्तु आपने उसमें ईश्वरीय प्रेम का बीज देखा और उसे प्रस्फुटित होने की क पा दी। इस तरह उसमें निहित ईश्वरीय प्रेम क्रियाशील बन गया।

हे प्रभु! मैं बहुत से लोगों से मिलता हूँ। मेरी सहायता कीजिए कि मैं उनके लिए आपका प्रतिरुप बनूँ, उनकी सहायता व सेवा करूँ ताकि ऐसी मुलाकातें हम सब के लिए ईश्वरीय अनुभव बन जाएँ और हम आपके अधिक निकट आ सकें। दुःखों को बाँटने से ही हमारा बोझ हल्का और आपसी सम्बन्ध अटूट होता है।

छठवाँ स्थान - वेरोनिका येशु का चेहरा पोंछती है: हे प्रभु! वेरोनिका आपके चेहरे से रक्त, पसीना और गन्दगी पोंछ देती है। अब आप देख सकते हैं। पर आप क्या देखते हैं ? रक्त रंजित कपड़ा, कोमल हाथ या दया का एक छोटा–सा कार्य ? नहीं, उस प्रेमपूर्ण छोटे–से कार्य में आप ने ईश्वर की उपस्थिति व दया को देखा।

मैं कई भले कामों को देखता और करता भी हूँ। लेकिन बहुधा स्वार्थ के कारण उन भले कार्यों की अच्छाई नष्ट हो जाती है। हे प्रभु, मुझे क पा दीजिए कि मैं कठोर हदय न होकर भूखे–प्यासे, गरीब, बीमार व्यक्तियों की सेवा में आपको पहचानूँ, उनके प्रति दयावान बनूँ और आपका अनुभव कर सकूँ।

सातवाँ स्थान - येशु दूसरी बार गिरते हैं: हे प्रभु! आप फिर से गिरते हैं और आपकी आँखों के सामने हैं – पत्थर, गन्दगी, और रक्त की बूँदें। आपके कानों में पड़ती हैं – लोगों की निन्दा और गालियाँ। आपका शरीर कोड़े और लात सहता है। किन्तु यहाँ इतनी बुराइयों के बीच भी आप ईश्वर से मिलते हैं, ईश्वर की आज्ञा का पालन करते हैं। हे प्रभु, हमें ऐसी क पा दे कि हम भी अपनी आज्ञाकारिता द्वारा उनकी प्रिय सन्तान बन सकें। जब हम पाप और निराशा में पड़ जाते हैं तब भी उसमें आपको देखने और अनुभव करने की क पा दीजिए। आपके प्रेम से हमें कुछ भी अलग नही कर सकता।

आठवाँ स्थान - येशु येरुसलेम की स्त्रियों को सांत्वना देते हैं : हे प्रभु आपने कहा, "मेरे लिए नहीं, बल्कि अपने व अपने बच्चों के लिए रोओ।" इसलिए हे प्रभु, अविश्वास व कठोर हृदय रखने के कारण मैंने व मेरे बच्चों ने तेरे विरूद्ध जो पाप किये हैं उसके प्रति सच्चा पश्चाताप करने की क पा दे, ईश्वर से विनम्र हृदय के साथ पाप क्षमा की याचना करने की क पा दे।

नवाँ स्थान - येशु तीसरी बार गिरते हैं : हे प्रभु! अवश्य ही उस समय आपके लिए सब कुछ कठिन था। आपका शरीर कमज़ोर हो गया था, मन चेतनहीन हो गया था और सब कुछ अन्धकारमय लग रहा था। अपने चारों ओर खड़े शत्रुओं को भी आप नहीं देख पा रहे थे। तब ईश्वर कहाँ थे ? आपके महान् प्रेरित सन्त पौलुस ने कहा : "जब मैं कमज़ोर हूँ, तभी उसमें ईश्वर की शक्ति प्रकट होती है।"

हे प्रभु, मैं कमज़ोर, कंगाल एवं पापी हूँ। कभी–कभी मेरी दशा बहुत शोचनीय बन जाती है। ऐसी परिस्थिति में मेरी सहायता कीजिए कि मैं अपनी कमज़ोरियों को आपको समर्पित कर सकूँ। मुझे कमज़ोर बनने दीजिए ताकि आप मुझमें बलवान हो सकें।

दसवाँ स्थान - येशु के कपड़े उतारे जाते हैं : प्रत्येक शरीर पवित्र आत्मा का मन्दिर है, प्रत्येक हृदय तेरा निवास स्थान है, प्रत्येक आत्मा तेरे लिए अमूल्य है। हे प्रभु, ऐसा पवित्र द ष्टिकोण मुझे भी प्रदान कर और मेरे शरीर और हृदय को शुद्ध कर। आधुनिक समय में स्त्री–पुरुषों के शरीर का अनुचित उपयोग किया जाता है जिससे मनुष्य की भोग–लिप्सा को उत्तोजित किया जा सके। हे प्रभु, मुझे क पा दीजिए कि हर सुन्दर महिला एवं पुरुष में आपको देखूँ और आपका सम्मान करूँ। तब अवश्य ही सभी शारीरिक प्रलोभन दूर हो जायेंगे।

ग्यारहवाँ स्थान- येशु को क्रूस पर ठोंका जाता है : हे प्रभु आपने क्रूस पर कहा, "मैं प्यासा हूँ" और आपने अत्याचारियों के लिए भी अपने पिता से प्रार्थना की थी। आप सभी आत्माओं की मुक्ति के लिए प्यासे हैं, उन्हें कितना चाहते है और अपने साथ एक बनाना चाहते हैं। मुंझे क पा दीजिए कि मैं तेरे लिए आत्माओं को बटोर सकूँ, ईश्वरीय प्रेम से अनुप्रेरित होकर शत्रुओं को प्रेम कर सकूँ व अपने अत्याचारियों के लिए प्रार्थना कर सकूँ। मैं पिता की तरह प्रेम मे परिपूर्ण बन जाऊँ।

बारहवाँ स्थान - येशु क्रूस पर प्राण त्याग देते हैं : म त्यु में जीवन कहाँ है ? म त्यु में ईश्वर कहा है ? फिर भी हर म त्यु एक मानवीय व्यक्ति की म त्यु है जिसमें ईश्वरीयता एवं अमरता की झलक है। हे म त्यु, कहाँ है तेरा डंक ? कहाँ है तेरी विजय ? हे प्रभु, मुझे यह समझने व विश्वास करने की क पा दीजिए कि हर म त्यु एक प्रवेश–द्वार है जो हमें अनन्त जीवन, अमरता, एवं ईश्वरीयता की ओर, हाँ, आपकी ओर ले जाता है। हे प्रभु, क पा दीजिए कि अपनी म त्यु से पहले मैं मुक्ति के लिए तैयार हो सकूँ, और हर म त्यु में, विशेष करके अपनी म त्यु में मैं आप से मिलूँ और आपका अनुभव कर सकूँ।

तेरहवाँ स्थान - येशु को क्रूस पर से उतारा जाता है : विलाप करने वालों को दिलासा कौन दे सकता है ? केवल ईश्वर ही सांन्त्वना व धैर्य का सच्चा स्त्रोत है। मैं मनुष्य पर नहीं, ईश्वर पर भरोसा रखूँगा तथा सान्त्वना की प्रतीक्षा करुँगा क्योकि तेरे दुःख भोग मे सहभागी होने पर मुझे वो ही सांन्त्वना देगा। मुझे बचाने के लिए आपने अपने जीवन को प्रेम के खातिर अर्पित किया जिससे हमारा ईश्वर से मेल हो जाये। मुझे ऐसी क पा दे कि मैं भी इस जीवन को तेरे लिए ही जीयूँ और सबकुछ ईश्वर की महिमा के लिए करुँ।

चौदहवाँ स्थान - येशु का शरीर कब्र में रखा जाता है : कब्रिस्तान बहुधा शान्तिपूर्ण स्थान होता है। किन्तु येशु की कब्र की जगह उस समय शांतिपूर्ण नहीं थी। वहाँ भूकम्प, विस्फोट, दौड़–धूप और उत्थान थे। हे प्रभु, मुझे उस कपटपूर्ण शान्ति से बचाइए जो समस्याओं में निष्क्रिय हो कर छिपने से मिलती है। मेरी सहायता कीजिए कि संसार के हलचलों, मुसीबतों, चुनौतियों और जीवन के खतरों में आपको ढूँढूँ और पाऊँ। सबसे अधिक गरीब, तुच्छ एवं परित्यक्त लोगों में आपको देखने एवं पहचानने की क पा दीजिए। वे जीवन की अनिवार्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तरसते हैं। उनमें मुझे आप से मिलने दीजिए।

समापन - प्रार्थना: ईश्वर सर्वव्यापी, सर्वज्ञ व सर्वशक्तिमान है। धर्मशिक्षा में यह प्रथम तथा बहुत सरल पाठ है। कितनी आसानी से मैंने इसे सीखा और तत्परता से बोलता भी हूँ। किन्तु यदि मुझे ईश्वर से मिलना और उनका अनुभव करना है तो मुझे उसे अपने हृदय मैं खोजना है जहाँ उसका

"मैंने मारने वालों के सामने अपनी पीठ कर दी और दाढ़ी नोचने वालों के सामने अपना गाल। मैंने अपमान करने और थूकने वालों से अपना मुख नहीं छिपाया।" (इसायाह 50:6)

निवास है। हे प्रभु येशु! आपने कहा है कि यदि कोई मुझे प्यार करेगा, तो वह मेरी शिक्षा पर चलेगा। मेरा पिता उससे प्यार करेगा और हम उसके पास आकर उसमें निवास करेंगे। इसलिए हे ईश्वर, मुझे तेरा विनम्र, आज्ञाकारी सेवक बना, जिससे तू मुझमें निवास करे और मैं तेरे पुत्र के क्रूस–पथ पर अपना क्रूस लिये चलता रहूँ और तरे पुत्र की महिमा मे भी सहभागी हो सकूँ।

हे प्रभु, मुझे क पा दीजिए कि मैं हर घटना, व्यक्ति और वस्तु में आपको पहचाँनू, आप से मिलूँ, और आपका अनुभव करुँ। (अब कुछ क्षण मौन रह कर ईश्वर का अनुभव करें।) **-फादर लेसर**

आर्दश उपवास और विश्राम दिवस

मार्च 1 से हम प्रार्थना और उपवास के चालीसा काल में प्रवेश कर चुके हैं। पर आप उपवास कैसे रखते हैं? उस दिन क्या–क्या करते हैं? क्या वह एक आदर्श उपवास कहलायेगा। प्रस्तुत है आर्दश उपवास पर**नबी इसायाह** द्वारा कथित ईश्वर का संदेश।

प्रभु–ईश्वर यह कहता है, "पूरी शक्ति से पुकारो, तुरही की तरह अपनी आवाज़ ऊँची करो–मेरी प्रजा को उसके अपराध और याकूब के वंश को उसके पाप सुनाओ। वे मुझे प्रतिदिन ढूँढ़ते हैं और मेरे मार्ग जानना चाहते हैं। एक ऐसे राष्ट्र की तरह, जिसने धर्म का पालन किया हो और अपने ईश्वर की संहिता नहीं भुलायी हो, वे मुझ से सही निर्णय की आशा करते और ईश्वर का सान्निध्य चाहते हैं। (वे कहते हैं) हम उपवास क्यों करते हैं, जब तू देखता भी नहीं ? हम तपस्या क्यों करते हैं, जब तू ध्यान भी नहीं देता।

देखो, उपवास के दिनों में तुम अपना कारबार करते और अपने सब मजदूरों से कठोर परिश्रम लेते हो। तुम उपवास के दिनों लड़ाई–झगड़ा करते और करारे मुक्के मारते हो। तुम आजकल जो उपवास करते हो, उस से स्वर्ग में तुम्हारी सुनवाई नहीं होगी।

क्या मैं इस प्रकार का उपवास, ऐसी तपस्या का दिन चाहता हूँ, जिसमें मनुष्य सरकण्ड़े की तरह अपना सिर झुकाये और टाट तथा राख पर लेट जाये ? क्या तुम इसे उपवास और ईश्वर का सुग्राह्य दिवस कहते हो ?

मैं जो उपवास चाहता हूँ, वह इस प्रकार है –**अन्याय की बेडियों को तोड़ना, जूए के बन्धन खोलना, पददलितों को मुक्त करना और हर प्रकार की गुलामी समाप्त करना। अपनी रोटी भूखों के साथ खाना, बेघर दरिद्रों को अपने यहाँ ठहराना। जो नंगा है, उसे कपड़े पहनाना और अपने भाई से मुँह नहीं मोड़ना।** तब तुम्हारी ज्योति उषा की तरह फूट निकलेगी और तुम्हारा घाव शीघ्र ही भर जायेगा। तुम्हारी धार्मिकता तुम्हारे आगे–आगे चलेगी और ईश्वर की महिमा तुम्हारे पीछे–पीछे आती रहेगी। यदि तुम पुकारोगे, तो ईश्वर उत्तर देगा। यदि तुम दुहाई दोगे, तो वह कहेगा– "देखो, मैं प्रस्तुत हूँ"। यदि तुम अपने बीच से अत्याचार दूर करोगे, किसी पर अभियोग नहीं लगाओगे और किसी की निन्दा नहीं करोगे; यदि तुम भूखों को अपनी रोटी खिलाओगे और पददलितों को त प्त करोगे, तो अन्धकार में तुम्हारी ज्योति का उदय होगा और तुम्हारा अन्धकार दिन का प्रकाश बन जायेगा। प्रभु निरन्तर तुम्हारा पथप्रदर्शन करेगा। वह मरुभूमि में भी तुम्हें त प्त करेगा और तुम्हें शक्ति प्रदान करता रहेगा। तुम सींचे हुए उद्यान के सद श बनोगे जलस्रोत के सद श, जिसकी धारा कभी नहीं सूखती। तब तुम पुराने खँड़हरों का उद्धार करोगे और पूर्वजों की नींव पर अपना नगर बसाओगे। तुम चारदीवारी की दरारें पाटने वाले और टूटे–फूटे घरों के पुनर्निर्माता कहलाओगे। यदि तुम विश्राम–दिवस का नियम भंग करना छोड़ दोगे और उस पावन दिवस को कारबार नहीं करोगे, यदि तुम उसे आनन्द का दिन, प्रभु को अर्पित तथा प्रिय दिवस समझोगे; यदि उसके आदर में यात्रा पर नहीं जाओगे, अपना कारबार नहीं करोगे और निरर्थक बातें नहीं करोगे, तो तुम्हें प्रभु का आनन्द प्राप्त होगा। मैं तुम लोगों को देश के पर्वत प्रदान करुँगा और तुम्हारे पिता याकूब की विरासत में त प्त करुँगा।" यह प्रभु का कथन है।

(इसायाह58:1-14)

6-मासीय/ 181-दिवसीय "नया-नियम" पाठ्य क्रम

हर महीने हम आपको "नया–नियम" भाग का दैनिक पाठ्यक्रम प्रस्तुत करेंगे जिसके अनुसार आप प्रतिदिन निर्धारित अध्यायों को पढ़कर6 माह के अन्दर "नये नियम" का पूरा पाठ कर सकेंगे। पिछले माह हमने आपको फरवरी के महीने का पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया था। अब प्रस्तुत है **मार्च के महीने का पाठ्यक्रम :**

तारीख	वचन	तारीख	वचन	तारीख	वचन
1	लूकस21	12	योहन8	23	योहन19
2	लूकस22	13	योहन9	24	योहन20
3	लूकस23	14	योहन10	25	योहन21
4	लूकस24	15	योहन11	26	प्रेरित-चरित 1-2
5	योहन1	16	योहन12	27	प्रेरित-चरित 3-4
6	योहन2	17	योहन13	28	प्रेरित-चरित 5-6
7	योहन3	18	योहन14	29	प्रेरित-चरित 7-8
8	योहन4	19	योहन15	30	प्रेरित-चरित 9-10
9	योहन5	20	योहन16	31	प्रेरित-चरित 11-12
10	योहन6	21	योहन17	अप्रैल01	प्रेरित-चरित 13-14
11	योहन7	22	योहन18	02	प्रेरित-चरित 15-16

'जीवन-धाम' के जीवित साक्ष्य

तीस साल पुरानी धूम्रपान की आदत से मुक्ति मिली

मैं जीवन–धाम में पिछले 8-9 महीने से आ रहा हूँ। मैं जब 20 वर्ष का था तब से ही मिस्त्री का काम करता आ रहा हूँ (अब राजमिस्त्री हूँ)। और तब से ही मेरी बीड़ी पीने की बुरी आदत लग गई थी। अब मैं50 साल का हूँ और यहाँ अपने भाई के साथ, आने के 4 महीने बाद से मैंने बीड़ी पीना बिल्कुल ही छोड दिया है। बीड़ी पीने के साथ–साथ मैं कभी–कभी शराब भी पीता था। वह भी मैंने छोड़ दी है। रोज़ मैं कम से कम दो बीड़ी के बण्ड़ल फूँक देता था। मैंने इससे मुक्ति पाने की कोशिश की थी, पर असफल रहा। मेरी छाती में बलगम बनी रहती थी तथा खाँसी भी आती थी। पर यहाँ आने के बाद जब से मैंने पीना छोड़ दिया है, उसके बाद से धीरे–धीरे मेरी खाँसी भी बंद हो गई है। प्रभु ने मुझे इस बुरी आदत से छुटकारा दिलाया है।

10 साल से मुझे गीले सीमेन्ट से एलर्जी थी। मेरी हथेली पर घाव बन जाते थे, ऊँगलियाँ कट जाती थीं और बहुत दर्द होता था। कई डॉक्टरों को दिखाया और कई बार इन्जैक्शन लगवाये। पर हथेली के घाव सूखते नहीं थे और मेरा काम करना भी मुश्किल व दर्दनाक था। डॉक्टर ने मुझे इस काम को छोड़ कर कोई और रोज़गार ढूँढ़ने की सलाह दी। मुझे रोज़ गोली खानी पड़ती थी और अब पिछले 4 महीने से प्रभु की अनुकम्पा के कारण, मैंने एक भी गोली नहीं खाई है और हथेली के घाव भी धीरे–धीरे

"जब तुम उपवास करते हो, तो अपने सिर में तेल लगाओ और अपना मुँह धो लो, जिससे लोगों को नहीं, केवल तुम्हारे पिता को, जो अद श्य है, यह पता चले कि तुम उपवास कर रहे हो।" (मती6:17-18)

सभी सूख गये हैं। अब मैं बिना किसी मुश्किल के अपना काम कर लेता हूँ। ईश्वर की स्तुति हो और लाखों बार धन्यवाद!

करण लाल, फरीदाबाद

"जिसने स्वर्ग और प थ्वी को बनाया है, वही प्रभु मेरी सहायता करता है। वह तुम्हारा पैर फिसलने न दे, तुम्हारा रक्षक न सोये।...प्रभु तुम्हें हर बुराई से बचायेगा, वह तुम्हारी आत्मा की रक्षा करेगा।" (स्तोत्र 121:2-3,7)

एक अद्भुत रोग-शान्ति ! जन्म से गला हुआ शरीर स्वस्थ हुआ!

प्रभु येशु की स्तुति, धन्यवाद और महिमा! मैं अपने पड़ोसी, बिजेन्द्र (उम्र 15वर्ष), लड़के को कई हफ्तों से जीवन–धाम में हर इतवार ला रही हूँ। मैं पिछले ड़ेढ़ साल से यहाँ आ रही हूँ और प्रभु ने मुझे अपने क पाओं द्वारा द ढ़ विश्वासी बना दिया है। बिजेन्द्र का शरीर जन्म से ही गलता रहता था– उसके हाथों से, छाती व पैरों से पस निकलती थी, उसके हाथ व पैर के नाखून लम्बे हो जाते थे जिन्हे काटना पड़ता था। हाथ के नाखूनों के बीच पस आती थी। वह दर्द के मारे रोता थ। बचपन से ही इसका इलाज चल रहा था। अनेक डॉक्टरों से दवा खाने पर भी चंगाई (रोगमुक्ति) न मिल सकी। मुँह में भी माँस पका हुआ था। न तो वह खा सकता था, न वह सो सकता था, न चल सकता था, न मल निकाल सकता था–सभी उसके लिए दर्दनाक काम थे। ***"मुझे न तो सुख है, न शान्ति और न विश्राम। यन्त्रणा ही मुझे सताती रहती है।" (अय्यूब 3:26)***

इन15 सालों में कोई भी इलाज सफल नहीं हुआ। इसके दुःख– पीड़ा को देखकर मैं इसे जीवन–धाम में लाने लगी। इसे धीरे–धीरे प्रार्थना व ईश–वचन के द्वारा आराम मिलने लगा। प्रभु ने दया कर हमारी प्रार्थना सुन ली। यहाँ आने के बाद उसने दवा खानी छोड़ दी और उसके शरीर के घाव सूखने लगे। अब प्रभु की क पा से उसके सिर्फ पैरों में घाव रह गये हैं (ऊपर दिये चित्र)। सभी अन्य घाव सूख चुके हैं, नाखून भी अब उसके बढ़ते नहीं हैं और अब वह खा–पी व सो सकता है, आराम से बैठ सकता है। यह प्रभु का वाकई अनोखा अनदेखा चमत्कार है।

बिजेन्द्र, मथुरा

★ बाईबिल प्रतियोगिता ★

5) मारकुस रचित सुसमाचार
f) अध्याय 7-9

इन वाक्यांशों में रिक्त स्थानों को भरें, जो सन्त मारकुस के अध्याय 7 से **9** तक से लिये गये हैं। अपने उत्तर में आपने अध्याय व वाक्यांश संख्या को रिक्त स्थान सहित लिख भेजना है–

1)"जब मैंने_____हज़ार लोगों के लिए_____ रोटियाँ तोड़ीं, तो तुमने टुकड़ो से कितने टोकरे भरे थे ?" शिष्यों ने उत्तर दिया,"____।

2)"जो मनुष्य में से निकलता है, वही उसे____करता है। क्योंकि_____विचार भीतर से, अर्थात् मनुष्य के____से निकलते हैं।"

3)"____ और____के सिवा और किसी उपाय से यह____नहीं निकाली जा सकती।"

4)उसी क्षण उसके_____खुल गये और उसकी_____का बन्धन छूट गया, जिससे वह अच्छी तरह_____।

5) हम_____तम्बू खड़ा कर दें–एक आपके लिए, एक _____और एक_____के लिए।

6) "मानव_____ को बहुत _____ उठाना होगा; नेताओं, महायाजकों और शास्त्रियों द्वारा_____जाना, मार डाला जाना और तीन_____के बाद जी उठना होगा।"

7) "ये व्यर्थ ही मेरी पूजा करते हैं, और ये जो_____देते हैं, वे हैं_____के बनाये हुए_____मात्र"।

8) येशु को देखते ही_____ने लड़के को मरोड दिया। लडका_____ गया और_____उगलता हुआ भूमि पर लोटता रहा।

5) मारकुस रचित सुसमाचार
e) अध्याय 4-6

1) अपदूतों, सूअरों, घुसने। (5:12)
2) हेरोद, योहन, सिर, कटवाया।(6:16)
3) रोटियों, मछलियों, बारह, पाँच।(6:43-44)
4)नाप,नापते, अधिक।(4:24)
5)येशु, तकिया, सो।(4:38)
6)थाली, योहन, बपतिस्ता, सिर।(6:25)
7)भूमि, फसल, अंकुर, बाल।(4:28)
8)नगर, कुटुम्ब, घर, नबी।(6:4)

प्रतियोगिता के नियम

क) प्रतियोगिता के उत्तर अगले महीने के 20 तारीख तक हमारे पास पहुँच जाने चाहिएँ। उत्तर एक पोस्ट कार्ड या चिट्ठी में इस पते पर लिख भेजिए – **जीवन-धाम, मकान नं० 696, सैक्टर-22, फरीदाबाद-121005, हरियाणा।**

ख) अपना नाम व पता स्पष्ट शब्दों में लिखिए। प्रतियोगिता की संख्या एवं शीर्षक लिखना ज़रुरी है। सभी उत्तर(प्रश्न संख्या सहित) क्रमानुसार होने चाहिएँ।

ग) इनाम सिर्फ उन प्रतियोगियों को मिलेगा जो लगातार तीन प्रतियोगिताओं के सही–सही उत्तर समय पर देंगे।

घ) प्रतियोगिता के सही उत्तर अगले माह के प्रकाशन में बताये जायेंगे।

Visit our website:
www.jeevandham.org
E-mail : justcallanthony@yahoo.com

क्या आप चिन्तित.....हैं ?
क्या आप दुःखी.....हैं ?
क्या आप रोगी.....हैं ?
क्या आप के मन में अशान्ति.....है ?

आपको सांत्वना देने के लिए एक जगह है। वह है 'जीवन-धाम'। आप सन्त अन्तोनी स्कूल, सैक्टर-9 फरीदाबाद में हर रविवार प्रातः9.00 बजे से12.30 बजे तक 'जीवन-धाम'696/22, फरीदाबाद द्वारा आयोजित प्रार्थना सभा में भाग लेकर यीशु के अनुग्रहों को प्राप्त कर सकते हैं।